



فضائل درود و سلام

ٱللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِکُ عَلَى حَبِيبِکَ مُحَمَّدٍ وَّالِهِ صَلاَةً كَمَا تُصَلِّيُ بِحَسُبِ شَانِکَ

کم آفنابِ حرم، تاجدارِ حرم، پیکر اتم، آفائے مختشم کے نے فرمایا! ''جس نے میرے حق کی تعظیم کے لیے بھی پر درود بھیجا اللہ اس درود پاک سے ایک فرشتہ پیدا فرما تا ہے، جس کا ایک پر مشرق میں اور دوسرا مغرب میں ۔ اس کے پاؤں سب سے بحل ساتویں زمین میں گھہرے ہوئے ہیں اور اس کی گردن عرش کے نیچے لیٹی ہوئی ہے۔ اللہ تعالی اسے فرما تا ہے! میرے بندے پر درود بھیج جس طرح اس نے میرے نبی کھی پر درود بھیجا، پس وہ بندے پر قیامت تک درود بھیجارہے گا۔'' (مطالع المسر ات)

आफताबे हरम, ताजदारे हरम, पेकरे अतम, आका़-ए मोहतशम के ने फरमाया! ''जिस ने मेरे हक़ की ताज़ीम के लिए मुझ पर दरूद भेजा अल्लाह उस दरूद पाक से एक फरिशता पैदा फरमाता है, जिस का एक पर मशरिक़ में और दूसरा मग़रिब में। इस के पाओं सब से निचली 7 वीं ज़मीन में ठेहरे हुए हैं और उस की गंदन अर्श के नीचे लिपटी हुई है। अल्लाह तआ़ला उस से फरमाते हैं! मेरे बन्दे पर दरूद भेज जिस तरह उस ने मेरे नबी अ पर दरूद भेजा, पस वो बन्दे पर क़्यामत तक दरूद भेजता रहेगा''। (मुतालेआ अलमुसरात)

اَللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِكُ عَلَى حَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ وَّالِهِ صَلاَةً كَمَا تُصَلِّى بِحَسْبِ شَانِكَ

🖈 انسانیت کے محسن، تجلیات کے مخزن، خوشبوخوشبوجن کا دامن، آقائے من، اُمید

درود معراج حیدری و فضائل درود و سلام

کی کرن ﷺ نے فر مایا!''جس نے مجھ پرایک مرتبہ درود بھیجااللہ اس پردس مرتبہ درود بھیجتا ہے اور جس نے مجھ پردس مرتبہ درود بھیجتا ہے اور جس نے مجھ پر دس مرتبہ درود بھیجا جنت کے دروازہ پر اس کا کندھا میرے کندھے کے ساتھ ہوگا''۔ (مطالع المسرات)

इंसानियत के मोहिसन, तजिल्लियात के मख़ज़न, ख़ुशबू-ख़ुशबू जिन का दामन, आक़ा-ए मन, उम्मीद की किरन के ने फरमाया! "जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दरूद भेजा अल्लाह उस पर दस मर्तबा दरूद भेजता है और जिस ने मुझ पर दस मर्तबा दरूद भेजा अल्लाह उस पर सौ मर्तबा दरूद भेजता है और जिस ने मुझ पर हज़ार मर्तबा दरूद भेजा जन्नत के दरवाज़े पर उस का कंधा मेरे कंधे के साथ होगा। (मुतालेआ अलमुसरात)

الله مَّ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِكُ عَلَى حَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ وَّالِهِ صَلاَةً كَمَا تُصَلِّى بحَسُب شَانِكَ

ہے بحر جودوسخا، دافع جملہ بلا، جانِ صدق وصفا، کنزلطف وعطا ﷺنے فر مایا!''جو
ہمھ پرایک بار درود بھیجتا ہے اللہ اس پردس بار درود بھیجتا ہے۔اس کے بعد آسانِ دنیا
کے رہنے والوں کواس کے درود سے متعارف کروایا جاتا ہے اور انہیں اس درود کے
پڑھے میں شریک کیا جاتا ہے۔اور درود پاک پڑھنے والے پرسو بار درود وسلام بھیجا
جاتا ہے۔ پھر آسانِ دوم سے اس درود پاک پڑھنے والے کا تعارف کرایا جاتا ہے اور
وہاں کے لوگ اس محض پر بائیس بار درود بھیجتے ہیں۔اسی طرح آسانِ سوم کے لوگوں کو
اس کے درود پر واقف کیا جاتا ہے اور وہاں کے لوگ اسی طرح اس محض پر ہزار بار
درود بھیجتے ہیں۔اس درود کو آسان جہارم کے لوگ سنتے ہیں تو دو ہزار بار درود بھیجتے
ہیں۔اس آواز کو جب آسان بخم کے لوگ سنتے ہیں تو وہ جواب میں پانچ ہزار درود
پڑھتے ہیں۔آسان ششم کے لوگ جب اس درود پاک کی آواز سنتے ہیں تو وہ چھر ہزار
بار درود پاک پڑھتے ہیں۔آسان ہفتم کے لوگ اس درود پاک کے جواب میں سات
ہزار بار درود پاک پڑھتے ہیں۔آسان ہفتم کے لوگ اس درود پاک کے جواب میں سات
ہزار بار درود ویا کی پڑھتے ہیں۔آسان ہفتم کے لوگ اس درود پاک کے جواب میں سات

बहरे जूदो सखा, दाफि-ए जुमला बला, जाने सदके व सफा, कन्जे लुत्फ व अता 🏙 ने फरमाया! ''जो मुझ पर एक मर्तबा दरूद भेजता है <mark>अल्लाह उस पर दस बार दरूद भेजता है। उस के बाद आसमाने दुनिया</mark> के रहने वालों को उस के दरूद से मृताआरिफ करवाया जाता है और उन्हें उस दरूद के पढ़ने में शरीक किया जाता है और दरूद पाक पढ़ने वाले पर सौ बार दरूद व सलाम भेजा जाता है! फिर आसमाने दोम से उस दरूद पाक पढने वाले का ताअरूफ कराया जाता है और वहाँ के लोग उस शख्स पर बाईस बार दरूद भेजते है। इस तरह आसमाने सोम के लोगों को उस के दरूद पर वाकिफ किया जाता है और वहाँ के लोग इसी तरह उस शख्स पर हजार बार दरूद भेजते हैं। इस दरूद को आसमाने चाहरम के लोग सुनते हैं तो दो हजार बार दरूद भेजते हैं। उस अवाज को जब आसमाने पंजम के लोग सुनते हैं तो वह जवाब में पाँच हजार दरूद पडते हैं। आसमाने शिशम के लोग जब उस दरूद पाक की अवाज सुनते हैं तो वह छे हजार बार दरूद पाक पढ़ते हैं। आसमाने हफतुम के लोग इस दरूद पाक के जवाब में सात हजार बार दरूद पाक पडते हैं। उस के बाद अल्लाह तआ़ला फरमाता है। इस तमाम दरूद व सलाम का सवाब मेरे उस बन्दे को अता किया जाए जिस ने मेरे नबी 🏭 पर दरूद पढा था। में ऐलान करता हूँ के उस के तमाम गुनाह बख्श दिए गए हैं। यह ऐज़ाज़ मेरे नबी 🕮 पर दरूद पढ़ने की वजह से हैं। (मआरिज अल-नबुवत)

اَللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِكُ عَلَى حَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ وَّالِهِ صَلاَةً كَمَا تُصَلِّي بِحَسُبِ شَانِكَ

للحض روایات میں ذکر کیا گیا ہے کہ! ''جب ایماندار مردیا عورت نبی ﷺ پر

درودِ معراجِ حیدری و فضائلِ درود و سلام

درود بھیجنا شروع کرتے ہیں توان کے لیے آسانوں اور زمینوں کے دروازے عرش تک کھول دیئے جاتے ہیں۔ آسان کا ہر فرشتہ اللہ تعالیٰ کے حبیب ﷺ پر درود بھیجتا ہے اور تمام فرشتے اس مردیا عورت کے لیے دعائے مغفرت کرتے ہیں جس قدر خدا

كومنظور بوتائے '_(مطالع المسرات)

बाज़ रिवायात में ज़िक्र किया गया है की! ''जब ईमानदार मर्द या औरत नबी ﷺ पर दरूद भेजना शुरू करते हैं तो उस के लिए आसमानों और ज़मीनों के दरवाज़े अर्श तक खोल दिए जाते हैं। आसमान का हर फरिश्ता अल्लाह तआ़ला के हबीब ﷺ पर दरूद भेजता है और तमाम फरिश्ते उस मर्द या औरत के लिए दुआ-ए मग्फिरत करते हैं जिस कृद्र खुदा को मंजूर होता है''। (मुतालेआ अलमुसरात)

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِكُ عَلَى حَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ وَّالِهِ صَلاَةً كَمَا تُصَلِّى بحَسُبِ شَانِكَ

کان لعل کرامت، جمال روح حیات، جمیج البرکات پیرورود پاک بھیجنا ہے تواللہ کان لعل کرامت، جمال روح حیات، جمیج البرکات پیرورود پاک بھیجنا ہے تواللہ تعالیٰ ایک فرشتے کومقرر کرتا ہے جواس درود پاک کے تحفے کوفوراً سرکاردوعالم بھی کے ساتھ لے آتا ہے اور برملا کہتا ہے! یا رسول اللہ فیا! فلال بن فلان یا فلال بنت فلال بنت فلال بنت فلال بنت فلال بنت فلال بنت منازہ من فلال نے آپ پی بار درود پاک بھیجا ہے۔حضور پی نہایت فرحت وشاد مائی کے ساتھ جواب دیتے ہیں! میری طرف سے اسے دس بارسلام پہنچاؤاوراسے پیغام دے دو کواگران دس میں سے ایک بھی تیرے ساتھ ہوگا تو جنت میں میرے ساتھ وہ فرشتہ روضۂ رسول بی سے بارگا و خداوندی میں حاضر ہوتا ہے اورعرض کرتا ہے، اللہ! فلال بندے نے تیرے حسیب پی پر ایک بار درود پاک بھیجا ہے۔ اللہ تعالیٰ اللہ! فلال بندے نے تیرے حسیب پی پر ایک بار درود پاک بھیجا ہے۔ اللہ تعالیٰ فرما تا ہے! میری طرف سے اسے دس بار مدیہ سلام بھیجا جائے اورا سے بشارت دی فرما تا ہے! میری طرف سے ایک بھی تیرے ساتھ ہوگا تو تیجے آگ نہ چھوئے گ۔ جائے کہا گران دس میں سے ایک بھی تیرے ساتھ ہوگا تو تیجے آگ نہ چھوئے گ۔

درود معراج حیدری و فضائل درود و سلام ۱۹۸۸ ۱۹۸۸

پھراللہ تعالیٰ اعلان فرماتے ہیں! کہ میرے بندے کے درود کو بہترین ہدیہ تصور کیا جائے اور اسے علیین میں محفوظ کرلیا جائے۔ تاکہ قیامت کے دن اسکے لیے ذخیرہ کہ ترت بن سکے۔ اس کے بعداس درود پاک کے ایک ایک حرف کے بدلے ایک ایک فرشتہ پیدا فرمائے گا۔ ہرایک فرشتہ کے میں ہزارساٹھ سر ہول گے اور ہر سر پر تمیس ہزارساٹھ سر ہول گے اور ہر چہرے پہیس ہزارساٹھ زبانیں ہول گی اور ہر زبان تمیں ہزارساٹھ اداکرتی رہے گی۔ ہرفت زبان تمیں ہزارساٹھ بارحمد خداوندی اور نعتوں کا ثواب اس کے نامہ اعمال میں لکھا جائے گا جس نے ایک بارحضور پر نور بھی پر درود پڑھاتھا''۔ (معارج النہوتہ)

हजरत अब हरैराह 🤲 से मर्वी है कि जब कोई मोमिन जो हर आईना तजल्लियात. काने लाअले करामत. जमाल रूहे हयात. जमीं अल-बरकात 🕮 पर दरूद पाक भेजता है तो अल्लाह तआला एक फरिश्ते को मुकरर करता है जो इस दरूद पाक के तोहफे को फौरन सरकार दो आलम 🎥 के सामने ले आता है और बरमला कहता है। या रसलल्लाह 🎎! फलॉ बिन फलॉ या फलॉ बिन्ते फलॉ ने आप 🎥 पर एक बार दरूद पाक भेजा है। हुजूर 🕮 निहायत फरहत व शादमानी के साथ जवाब देते हैं। मेरी तरफ से उसे दस बार सलाम पहुँचाओ और उसे पैगाम दे दो कि अगर उस दस में से एक भी तेरे साथ होगा तो तू जन्नत में मेरे साथ ऐसे होगा जैसे यह सबाबाह और वस्ती ऊँग्लियाँ हैं और तेरे लिए मेरी शिफाअत हलाल होगी। वह फरिश्ता रोजा-ए रसुल 🎉 से बारगाहे खुदा वन्दी में हाजिर होता है और कहता है, ऐ अल्लाह। फलॉ बन्दे ने तेरे हबीब 🕮 पर एक बार दरूद पाक भेजा है। अल्लाह तआला फरमाता हैं। मेरी तरफ से दस बार हदिया सलाम भेजा जाए और उसे <mark>बशारत दी जाए</mark> कि अगर उन दस में से एक भी तेरे साथ हो<mark>गा तो तुझे</mark> <mark>आग न छुऐगी।</mark> फिर अल्लाह तआला फरमाते हैं। कि मेरे बन्दे <mark>के दरूद</mark> को बहतरीन हदीया तसव्वर किया जाए और उसे इल्लियीन में महफूज कर लिया जाए ताकि कयामत के दिन उस के लिए जखीरा आखिरत बन सके। उस के बाद उस दरूद पाक के एक एक हुफ के बदले एक एक फरिश्ता पैदा फरमाऐगा हर एक फरिश्ते के तीस हजार साठ सर होंगे और हर सर पर तीस हजार साठ चेहरे होंगे और हर चेहरे पर तीस हजार साठ

درود معراج حیدری و فضائل درود و سلام م

ज़बाने होंगी और हर ज़बान तीस हज़ार साठ बार हमदे खुदा वन्दी और नाअते रसूल खुदा ﷺ अदा करती रहेगी। हर नाअत दूसरी नाअत मुखतिलिफ होगी। इन तमाम नाअतों का सवाब उस के नामा-ए आमाल में लिखा जाऐगा जिस ने एक बार हुज़ूर पुर नूर ﷺ पर दरूद पढ़ा था। (मआरिज अल-नबुवत)

اَللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِكُ عَلَى حَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ وَّالِهِ صَلاَةً كَمَا تُصَلِّى بحَسُب شَانِكَ

جلوهٔ انوارِ وحدت، مرکز نورِ ہدایت، زینتِ بزمِ کثرت، جوارثِ مریضانِ محبت، صاحبِ تاج حتم نبوت کے فرایا!'' بے شک اللہ تعالیٰ کا ایک فرشتہ ہے۔ جس کے دو پر ہیں۔ ایک مشرق میں اور دوسرا مغرب میں جب کوئی بندے محبت بھرے انداز میں مجھ پر درود پڑھتا ہے تو وہ پانی میں غوطہ لگا تا ہے پھرا پنے پرجھاڑتا ہے تو اللہ تعالیٰ اس کے ہر قطرے سے ایک فرشتے پیدا فرما تا ہے۔ جو مجھ پر درود پڑھنے والے لیے قیامت تک استغفار کرتارہے گا''۔ (القول البدلیم)

जलवा-ए अनवारे वहदत, मरकज़े नूरे हिदायत, ज़ीनते बज़मे कसरत, जवारिशे मरीज़ाने मुहब्बत, साहिबे ताज खत्मे नबूवत किने फरमाया! "बे शक अल्लाह तआ़ला का एक फरिशता है। जिस के दो पर हैं। एक मशरिक़ में और दूसरा मग़रिब में जब कोई बन्दा मुहब्बत भरे अन्दाज़ में मुझ पर दरूद पढ़ता है तो वो पानी में ग़ोता लगाता है फिर अपने पर झाड़ता है तो अल्लाह तआ़ला इस के हर क़तरे से एक फरिशता पैदा फरमाता है। जो मुझ पर दरूद पड़ने वाले के लिए क़्यामत तक अस्तग़फार करता रहेगा। (अल-क़ोल अल-बदी)

اَللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِكُ عَلَى حَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ وَّالِهِ صَلاَةً كَاللَّهُمَّ صَلاَةً كَاللَّهُمُ صَلاَةً كَمَا تُصَلِّى بِحَسْبِ شَانِكَ جَرائيل السَّا فَواجَهُ الطحاءِ وَاجهُ مِروسِرا، خسة دلول كاسهارا الشَّاسة عَرْضُ كَم

جبرائیل النی نے خواجہ کبلی ،خواجہ کبردوسرا، خستہ دلوں کا سہارا ﷺ ہے عرض کیا یا رسول ﷺ اللہ تعالیٰ فرما تا ہے! جو شخص آپ ﷺ پردس مرتبہ درود بھیجتا ہے اس کے

درودِ معراجِ حيدرى و فضائلِ درود و سلام من من المنظم المنظ

ليے مير بے غضب سے امان ہوگئ۔ (القول البديع)

जिबराईल अब्बी ने ख़्वाजा-ए बतहा, खस्ता दिलों का सहारा कि से अर्ज़ किया गया या रसूलल्लाह कि अल्लाह तआला फरमाता है! जो शख़्स आप कि पर दस मर्तबा दरूद भेजता है उस के लिए मेरे गृज़ब से अमान हो गई। (अल-को़ल अल-बदी)

الله مَّ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِكُ عَلَى حَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ وَّالِهِ صَلاَةً كَمَا تُصَلِّى بحَسُب شَانِكَ

کم خالق فطرت کے حرفِ اوّل، خاصۂ خاصانِ رسل، عقلِ کل کے فرمایا!

''جب درودشریف پڑھنے والا درود پڑھتا ہے، تو اللہ تعالیٰ اس سے ایک عظیم پرندہ
پیدا فرما تا ہے۔جس کے ستر ہزار بازو، ہر بازو میں ستر ہزار پر، ہر پر کے ستر ہزار سر،
ہرسر کے ستر ہزار چہرے، ہر چہرے کے ستر ہزار مند، ہرمنہ میں ستر ہزار زبا نیں اور
زبان سے ستر ہزار بولیوں میں، ہر لمحہ اللہ تعالیٰ کی تشیج و تقدیس کرتا رہتا ہے اور بیہ
ثواب اس درود پاک پڑھنے والے کے نامۂ اعمال میں لکھ دیا جاتا ہے۔ بی فرشتہ
قیامت تک اس کی قبر پر کھڑا دُعا کرتا رہے گا، تو درود پڑھنے والے کی قبر بقعہ طور
باغیج 'نورسے کستوری کی خوشبوآتی رہے گی'۔ (مطالع المسر ات)

खालिकें फितरत के हुफें अव्वल, खासेआ खासाने रसूल, अकले कुल कें ने फरमाया! "जब दरूद शरीफ पड़ने वाला दरूद पड़ता है, तो अल्लाह तआला उस से एक अज़ीम परिन्दा पैदा फरमाता है। जिस के सत्तर हज़ार बाज़ू, हर बाज़ू में सत्तर हज़ार पर, हर पर के सत्तर हज़ार सर, हर सर के सत्तर हज़ार चेहरे, हर चेहरे के सत्तर हज़ार मूँह, हर मूँह में सत्तर हज़ार ज़बाने, और हर ज़बान से सत्तर हज़ार बोलियों में, हर लम्हा अल्लाह तआला की तस्बी व तकदीस करता रहता है और यह सवाब उस दरूद पाक पड़ने वाले के नामे आमाल में लिख दिया जाता है। यह फरीशते क़्यामत तक उस की कृत्र पर खड़ा दुआ करता रहेगा, तो दरूद पड़ने वाले की कृत्र बक़ीया तोर बिग्चे नूर से कसतूरी की खुशबू आती रहेगी"। (मुतालेआ अलमुसरात)

درودِ معراجِ حيدري و فضائلِ درود و سلام

اَللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِكُ عَلَى حَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ وَّالِهِ صَلاَةً كَمَا تُصَلِّى بحَسُب شَانِكَ

الکِ ہر ماسوا مشعلِ برزم صوفیاء، نورالہدیٰ ﷺ نے فر مایا! کہ''میری اُمت ہے ایک بھی ایسا شخص نہیں ہوگا جو مجھے یاد کرے اور مجھ پر درود پڑھے تواس کے سارے گناہ بخشے نہ جائیں گے۔ان گناہوں کی تعدادخواہ ریت کے ذروں جتنی کیوں نہ ہو۔''

मशअले बज़्मे सुफिया, नुरूल-हुदा ﷺ ने फरमाया! के ''मेरे उम्मत से एक भी ऐसा शख़्स नहीं होगा जो मुझे याद करे और मुझ पर दरूद पड़े तो उस के सारे गुनाह बख़्शे न जाऐंगे। उन गुनाहों की तादाद ख़्वॉ रेत के जुरों जितनी क्यों न हो''।

الله مَ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِكُ عَلَى حَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ وَّالِهِ صَلاَةً كَمَا تُصَلِّيُ بِحَسُبِ شَانِكَ

رسول کریم، رؤف الرحیم ﷺ نے فرمایا! که''بہشت میں سب سے پہلے جے بہتی لباس پہنایا جائے گا وہ حضرت ابراہیم الکی ہوں گے۔ پھر آپ الکی کے لیے عرش کے دائیں جانب ایک کری بچھائی جائے گی۔ آپ الکی اس پرتشریف فرماہوں گے۔ حضرت ابراہیم الکی کے بعد مجھے نورانی لباس پہنایا جائے گا۔ صحابہ کرام نے حضور نبی کریم ﷺ سے دریافت کیا کہ یارسول اللہ ﷺ جس مقام پر آپ ﷺ جلوہ فرما ہوں گے وہاں کوئی دوسرا بھی آسکے گا؟ آپ ﷺ نے فرمایا! ہاں میراوہ اُمتی، جوفرض کی ادائیگی کے بعد دس بار درود پاک پڑھے گا۔ ایسے تخص کو بھی میری طرح بہتی کی ادائیگی کے بعد دس بار درود پاک پڑھے گا۔ ایسے تخص کو بھی میری طرح بہتی لباس پہنایا جائے گا۔ وہ مجھے دیکھے گا اور میں اس کود یکھوں گا اس اُمتی کا چرہ اس دن چود ہوس کے جاند سے بھی زیادہ درخشاں ہوگا'۔ (معارج النبی ق

रसूले करीम, रऊफुर्रहीम 🎒 ने फरमाया! के ''बहिश्त में सब से पहले जिसे बहिशती लिबास पेहनाया जाएगा वह हज्रत इब्राहीम 🕮 होंगे। फिर आप 🕮 के लिए अर्श के दाए जानिब एक कुर्सी बिछाई जाऐगी

🥻 درودِ معراجِ حيدري و فضائلِ درود و سلام 🏂 🗞

आप अप उस पर तशरीफ फरमा होंगे। हज्रत इब्राहीम के बाद मुझे नुरानी लिबास पहनाया जाएगा। सहाबा इकराम ने हुज़ूर नबी करीम के से दरयाप्त किया के या रसुलल्लाह कि जिस मकाम पर आप कि जलवा फरमा होंगे वहाँ कोई दूसरा भी आ सकेगा? आप कि ने फरमाया। हाँ मेरा वह उम्मती, जो फर्ज़ की अदाईगी के बाद दस बार दरूद पाक पड़ेगा। ऐसे शख्स को मेरी तरह बिहशती लिबास पहनाया जाऐगा। वह मुझे देखेगा और में उसे देखेंगा उस उम्मती का चेहरा उस दिन चोदवी के चाँद से भी ज्यादा

اللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِكُ عَلَى حَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ وَّالِهِ صَلاَةً كَمَا تُصَلِّى بِحَسْبِ شَانِكَ

दरखशॉ होगा''। (मआरिज अल-नबुवत)

ہے آ فاب ہرئی، محر لطف وعطا، حائی شاہ وگدا، دسگیر بنوا ﷺ نے فرمایا! که 'اللہ تعالیٰ نے مجھالی چیز عطا فرمائی ہے کہ کی دوسرے نبی کومیسر نہیں ہوئی وہ بیہ ہے کہ میری اُمت کے لیے بلند درجات عطا کیے گئے ہیں درجات مجھ پر درود پڑھنے کی وجہ سے عطا کیے گئے ہیں درجات مجھ پر درود پڑھنے کی وجہ سے عطا کیے گئے تھے۔ میری قبر پرایک فرشتہ مقرر کیا گیا ہے جس کا نام' نظروس' ہے۔ وہ اتنا ہزرگ اورجسیم ہے کہ اس کا سرتو عرش تک پہتا ہے اور قدم ارض تفلی میں ہوتے ہیں۔ اسی فرشتے کے اٹھارہ ہزار پر ہیں ہر پر کے نیچا ٹھارہ اٹھارہ ہزار سر ہیں۔ ہر سر میں اٹھارہ ہزار زبانیں ہیں۔ ہرزبان سے اللہ کی تحمید ہوتی ہے اور وہ چھ پر درود پڑھتا ہے تو وہ فرشتہ اس کے درود کو محفوظ کر لیتا ہے اور اللہ تعتیں کہی جاتی ہیں مجھ پر درود پڑھتا ہے تو وہ فرشتہ اس کے بعد فرمایا! جو شخص مجھ پر درود پڑھے گا میں مجھ گئی ہیں ہجھ پر درود کے بیا اللہ کے تمام فرشتے اس کے لیے دعا کہ میں بیش کرتا ہے۔ حضور ﷺ نیاس کے بعد فرمایا! جو شخص مجھ پر درود کریں گئی میں مجھ گئا اور تھم دے گا کہ بیتمام درودا اس کے نامہ اعمال میں درج کر لیے جائیں اور اس کے نامہ اعمال کواعلی علیین پر مضبوط ور کے نامہ اعمال کواعلی علیوں کے نامہ اعمال کواعلی علیوں کے نامہ اعمال کواعلی علیوں کے دورود کو کھور کورود کے کامہ اعمال کواعلی علیوں کے نامہ اعمال کواعلی علیوں کے نامہ کیا کہ کیا کہ کامہ کا میں کے کامہ کامہ کامہ کیا کہ کہ کہ کامہ کامہ کام کیا کہ کامہ کامہ کامل کواعلی علیوں کیا کہ کامہ کیا کہ کامہ کامہ کامہ کیا کہ کیا کہ کیا کہ کورود کی کورود کی کیا کہ کامہ کیا کہ کورود کی کیا کہ کیا کہ کامہ کامہ کامہ کامہ کیا کہ کورود کی کورود کرود کرود کی کورود کورود کی کے کورود کورود کورود کی کیا کہ کیا کہ کیا کہ کیا کہ کیا کہ کیا کہ کورود کرود کی کورود کی کورود کی کورود کیا گئی کورود کی کورود کی کورود کی کورود کی کورود کی کورود کی کورود کرود کیا کہ کورود کی کورود کرود کی کورود کی

من درود معراج حيدري و فضائل درود و سلام

आफताबे हुदा, बेहरे लुत्फ व अता, हामिये शाह व गदा, दस्तगीरे बे नवा 🕮 ने फरमाया! के ''अल्लाह तआ़ला ने मझे ऐसी चीज अता फरमाई है कि किसी दूसरे नबी को मय्यसर नहीं हुई वह यह है कि मेरी उम्मत के लिए बुलन्द दरजात अता किए गए है दरजात मुझ पर दरूद पडने की वजह से अता किए गए थे। मेरी कब्र पर एक फरिशता मुकर्र किया गया है। जिस का नाम 'नतरूस' है। वह इतना बुजुरूग और जसीम है के उस का सर अर्श तक पहुँचता है और कुदम अर्जे सफली में होते हैं। इसी फरिशते के अठ्ठारा हजार पर हैं हर पर के नीचे अठ्ठारा अठ्ठारा हजार <mark>सर हैं। हर सर में अठ्ठारा हजार मुँह और हर मुँह में अठ्ठारा अठ्ठारा</mark> <mark>हजार जबाने हैं। हर जबान से अल्लाह की तमहीद होती है और मुझ पर</mark> <mark>दरूद पडने वालों के लिए अस्तगफार। फिर हर जबान से हजार हजार</mark> नाअते कही जाती हैं मुझ पर दरूद पडता है तो वह फरिशता इस के दरूद को महफ्ज कर लेता है और अल्लाह तआ़ला की बारगाह में पेश करता है। हुजुर 🕮 ने उस के बाद फरमाया! जो शख्श मुझ पर दरूद पड़ेगा में मुहम्मद 🕮 उस पर दस हजार बार दरूद भेजूँगा अल्लाह के तमाम फरिशते उस के लिए दुआ करेंगे फिर अल्लाह तआला उस पर दस हजार बार दरूद भेजेगा और हक्म देगा के यह तमाम दरूद उस के नामा-ए आमाल में दर्ज कर लिए जायें और उस नामा-ए आमाल को आला इल्लियीन पर मज्बूत-वर-बूत कर दिया जाए''। (मआरिज अल-नबूवत)

اَللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِكُ عَلَى حَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ وَّالِهِ صَلاَةً كَمَا تُصَلِّي بِحَسُبِ شَانِكَ

☆ حضرت ابوہریرہ ﷺ ہے مروی کے کہ آفتابِ حجاز، چارہ ساز، خواجہ کیتی نواز
ﷺ نے فرمایا!" مجھ پر درود جیجنے والے کے لیے بل صراط پر ایک نور ہوگا اور جو بل
صراط پرنوروالا ہوگا، وہ جہنمی نہیں ہوگا"۔ (مطالع المسر ات)

हज्रत अब्बू हुरेराह 👛 से मरवी है के आफताबे हिजाज़, चारा साज़ 🍔 ने फरमाया मुझ पर दरूद वाले के लिए पुलसेरात पर एक नूर होगा जो पुलसेरात पर नूर वाला होगा, वह जहन्नमी नहीं होगा। आका़-ए दो आलम, ताजदारे अरब व अजम, जलव-ए रब्बे अकरम, अबु अल-का़सिम ﷺ का इरशाद है! ''मुझ पर दरूद पढ़ना पुलसेरात पर नूर है। जिस शख़्स ने मुझ पर दिन रात में 80 मर्तबा दरूद भेजा उस के 80 साल के गुनाह बख़्श दिए जाऐंगे''। (मुतालेआ अलमुसरात)

اَللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِكُ عَلَى حَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ وَّالِهِ صَلاَةً كَمَا تُصَلِّيُ بحَسُبِ شَانِكَ

خ حضرت عبدالرحمٰن بن عوف سے روایت ہے کہ آرزوئے انبیائے محترم،
پیکرخوبی وحسنِ مجسم، جانِ دوعالم، احسان مجسم کے نے فر مایا!''میرے پاس جبرائیل
ایک آئے۔انہوں نے کہا! یارسول اللہ کآپ کا اُمتی، آپ کی پر درود بھیج گا
اس پرستر ہزار فرشتے درود بھیجیں گے اور جس پر فرشتے درود بھیجیں گے وہی جنتی
ہوگا''۔(مطالع المسرات)

हज्रत अब्दुर्रेहमान बिन ओफ औ से रिवायत है के आरजु-ए अम्बिया-ए मोहतरम, जाने दो आलम, एहसान मुजस्सम के ने फरमाया! "मेरे पास जिबराईल औ आए। उन्होंने कहा! या रसुलल्लाह अप का जो उम्मती, आप अप पर दरूद भेजेगा उस पर 70 हज़ार फरिशते दरूद भेजेंगे और जिस पर फरिशते दरूद भेजेंगे वहीं जन्नती होगा"। (मुतालेआ अलमुसरात)

دروی معراج حیدری و فضائل درود و سلام ۱۹۹۹

کردوئے کلیم، احسانِ تقویم، احسانِ ربِ کریم، الطاف عمیم، احسانِ عظیم ﷺ نے فرمایا!''میرے پاس حضِ کوژ پر کئی ایسی جماعتیں آئیں گی جن کی پہچان مجھے سرف اس لیے ہوگی کہوہ مجھ پر کثرت سے درود جھیجے ہیں'۔ (مطالع المسرات)

आरजु-ए कलीम, अहसाने तक्वीम, अहसाने रब्बे करीम, अलताफ अमीम, अहसाने अजीम 🎒 ने फरमाया! ''मेरे पास होज़े को़सर पर कई ऐसी जमातें आऐंगी जिन की पहचान मुझे सिर्फ इस लिए होगी के वह मुझ पर कसरत से दरूद भेजते हैं''। (मुतालेआ अलमुसरात)

اَللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِكُ عَلَى حَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ وَّالِهِ صَلاَةً كَمَا تُصَلِّى بحسب شَانِكَ

حضرت انس ﷺ سے روایت ہے کہ اللہ کی بر ہان، چشم عرفان، اُمت کے پاسیان، امان ہے امان ﷺ نے فرمایا! جس نے مجھ پر ہزار مرتبہ درود شریف پڑھا۔ اللہ اس کا گوشت اوراس کی ہڈیاں آگ پرحرام فرمادیں گے۔(مطالع المسر ات)

हज्रत अनस 🐗 से रिवायत है के अल्लाह के बुरहान, चशमें इरफान, उम्मत के पासबान, अमान बे अमान 🕮 ने फरमाया! जिस ने मुझ पर हज़ार मर्तबा दरूद श्रीफ पढ़ा। अल्लाह उस का गोशत और उसकी हिंड्डयाँ आग पर हराम फरमा देगें। (मुतालेआ अलमुसरात)

اَللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِكُ عَلَى حَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ وَّالِهِ صَلاَةً كَمَا تُصَلِّيُ بِحَسُبِ شَانِكَ

چارہ در دِیتیماں، صورتِ بردال، امیر برم امکال، انیس بے کسال ﷺ نے فرمایا! ''جس نے مجھ پرایک مرتبہ درود بھیجا الله تعالیٰ اس پر دس مرتبہ درود بھیج گا اور جس نے مجھ پر سومرتبہ درود بھیج گا اور جس نے مجھ پر سو

🙀 درودِ معراجِ حيدري و فضائلِ درود و سلام 🐪 💸

مرتبه درود بھیجااللہ تعالی اس پر ہزار مرتبہ درود بھیج گااور جس نے مجھ پر ہزار مرتبہ درود بھیجااللہ اس کا جسم آگ پر حرام فر مادے گااور اس کو دنیا و آخرت میں سوال کے وقت قول ثابت کے ساتھ ثابت رکھے گااور اسے جنت میں داخل فر مائے گااور قیامت کے دن مجھ پر بھیجا ہوا اس کا درود اس حال میں آئے گا کہ اس کا نور پل صراط پر پاپنج سوسال کی مسافت تک ہوگا اور اسے ہر درود کے بدلے جواس نے مجھ پر بھیجا ہوگا جنت میں ایک کی عطا کرے گا۔ بیدرود کم ہویا زیادہ''۔ (مطالع المسر ات)

चारा-ए दर्दें यतीमा, सुरते यज़्दा, अमीर बज़में इमकॉ, अनीस बे-कसॉ के ने फरमाया! ''जिस ने मुझ पर एक मर्तबा दरूद भेजा अल्लाह तआला उस पर दस मर्तबा दरूद भेजेगा और जिस ने मुझ पर दस मर्तबा दरूद भेजोगा और जिस ने मुझ पर सौ मर्तबा दरूद भेजोगा और जिस ने मुझ पर सौ मर्तबा दरूद भेजोगा और जिस ने मुझ पर सौ मर्तबा दरूद भेजोगा और जिस ने मुझ पर हज़ार मर्तबा दरूद भेजोगा और जिस ने मुझ पर हज़ार मर्तबा दरूद भेजो अल्लाह उस का जिस्म आग पर हराम फरमा देगा और उस को दुनिया व आखिरत में सवाल के वक़्त क़ौल साबित के साथ साबित रखेगा और उसे जन्नत में दाखिल फरमाऐगा और क़्यामत के दिन मुझ पर भेजा हुआ उस का दरूद इस हाल में आऐगा के उस का नूर पुलसेरात पर पाँच-सौ साल की मुसाफत तक होगा और अल्लाह उसे हर दरूद के बदले जो उस ने मुझ पर भेजा होगा जन्नत में एक महल अता करेगा। यह दरूद कम हो या ज्यादा''। (मृतालेआ अलमसरात)

اَللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِكُ عَلَى حَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ وَّالِهِ صَلاَةً كَمَا تُصَلِّى بحَسُبِ شَانِكَ

کما تُصَلِّی بِحَسُبِ شَانِکَ

حضرت ابن عباس اسے روایت ہے کہ پیکرِ حسنِ جاں فزا، بحرِ لطف وعطا،
روحِ مہروفا، پیکر شرم وحیا اللہ نے فرمایا! '' جس شخص نے کہا! اللہ تعالی ہماری طرف سے
حضور سیدِ عالم ہے کو وہ جزاعطا فرمائے جس کے آپ ہالی ہیں۔اس نے لکھنے والوں
(فرشتوں) کو ایک ہزارض کے لیے مشقت میں ڈال دیا''۔ (مطالع المسر ات)

درود معراج حیدری و فضائل درود و سلام

हज्रत इब्ने अब्बास असे रिवायत है के पेकरे हुस्ने जाँ फज़ा, बहरे लुत्फ व अता, रूहे महर वफा, पेकरे शर्म व हया की ने फरमाया! ''जिस शख्स ने कहा। अल्लाह तआला हमारी तरफ से हुज़ूर सय्यदे आलम की को वो जज़ा अता फरमाए जिस के आप अहल हैं। उस ने लिखने वालो (फरिश्तों) को एक हज़ार सुबह के लिए मुशक्कृत में डाल दिया''। (मुतालेआ अलमुसरात)

दरूदे मेराज इसी हदीस शरीफ़ की दुआ के मफहूम पर है।

اَللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِكُ عَلَى حَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ وَّالِهِ صَلاَّةً كَمَا تُصَلِّي بحَسُب شَانِكَ

چاندسا کھڑا، گے ہے عرض کیا گیا! کہ'' آل مجمد گون ہیں، جن کی محبت، تعظیم
اور خدمت کا جمیں حکم دیا گیا ہے؟ فرمایا! صاف دل با وفا، جو مجھ پر مخلصانہ ایمان
لائے عرض کیا گیا! کہ ان کی علامتیں کیا ہیں؟ فرمایا! میری محبت کو ہر محبوب پرتر چح
دینا اور دل کو اللہ تعالیٰ کے ذکر کے بعد میرے ذکر سے مشغول رکھنا اور ایک روایت
میں ہے کہ! ان کی علامت میہ کہ جمیشہ میرا ذکر کرتے ہیں اور مجھ پر بکثرت ورود
میں ہے کہ! ان کی علامت ایہ کہ جمیشہ میرا ذکر کرتے ہیں اور مجھ پر بکثرت ورود
میں ہے کہ! ان کی علامت ایہ کہ جمیشہ میرا ذکر کرتے ہیں اور مجھ پر بکثرت ورود

चाँद सा मुखड़ा, के से अर्ज़ किया गया! कि "आले मुहम्मद कि कौन हैं, जिन की मुहब्बत, ताज़ीम और खिदमत का हमें हुक्म दिया गया है? फरमाया! साफ दिल ब वफा जो मुझ पर मुख्लिसाना ईमान लाए। अर्ज़ किया गया। कि इन की अलामतें क्या हैं? फरमाया! मेरी मुहब्बत को हर महबूब पर तरजीह देना और दिल को अल्लाह तआला के ज़िक्न के बाद मेरे ज़िक्न से मशगूल रखना और एक रिवायत में है कि। उन की अलामत यह है कि हमेशा मेरा ज़िक्न करते हैं और मुझ पर ब-कसरत दरूद भेजते हैं। (मुतालेआ अलमुसरात)

درود معراج حیدری و فضائل درود و سلام

اَللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِكُ عَلَى حَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ وَّالِهِ صَلاَةً كَاللَّهُم صَلِّهُ اللهِ صَلاَةً كَاللَّهُ مَا تُصَلِّي بحَسُب شَانِكَ

जलव-ए रब्बे करम, जिगर गोशा-ए काने करम, जलाले अज्मते आदम क्रिने इरशाद फरमाया! ''कोई बन्दा मुझ पर दरूद पढ़ता है तो फिरिश्ता इस दरूद को लेकर ऊपर जाता है और अल्लाह की बारगाह में पहुँचता है। अल्लाह फरमाते हैं! इस दरूद पाक को मेरे बन्दे की कृब्र में ले जाओ। यह अपने पढ़ने वाले के लिए अस्तग्फार करता रहेगा और इस की आँखें उसे देख कर ठण्डी होती रहेंगी''। (अल-कोल अल-बदी)

اَللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِكُ عَلَى حَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ وَّالِهِ صَلاَةً كَمَا تُصَلِّيُ بِحَسْبِ شَانِكَ كَمَا تُصَلِّيُ بِحَسْبِ شَانِكَ

🖈 حامیِ شاہ وگدا، عکسِ نورِ خدا، حامی کہر بے نوا ﷺ نے فرمایا! جو شخص مجھ پردن میں پیاس مرتبہ درود بھیجے گا، میں قیامت کے دن اس سے مصافحہ کروگا۔ (سعاد (ارین)

हामीए शाह व गदा, अकसे नूरे खुदा, हामीए हरबे नवा 🥌 ने फरमाया! जो शख्स दिन में मुझ पर पचास मर्तबा दरूद भेजेगा, मैं क्यामत के दिन उस से मुसाफा करूँगा। (सआदत अरीन)

اَللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِكُ عَلَى حَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ وَّالِهِ صَلاَةً كَمَا تُصَلِّيُ بِحَسْبِ شَانِكَ

🖈 عطائے رحمان ﷺ نے فر مایا! بے شک تم مجھ پر اپنے ناموں اور چہروں کے ساتھ پیش کیے جاتے ہولیس مجھ پر بہتر درود بھیجا کرو۔(القول البدلیج)

درود معراج حيدري و فضائل درود و سلام

अताऐ रहमान ﷺ ने फरमाया! बेशक तुम मुझ पर अपने नामों और चेहरों के साथ पेश किये जाते हो पस मुझ पर बेहतर दरूद भेजा करो। (अल-कोल अल-बदी)

اَللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِكُ عَلَى حَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ وَّالِهِ صَلاَةً كَمَا تُصَلِّيُ بِحَسُبِ شَانِكَ

☆ حبیب رب یگانه، حاملِ انوارِ کریمانه، یکتاً ئے زمانہ ﷺ نے فرمایا! ' نفرائض کی ادا ئیگی کا پختہ عزم کرلو کہ اس کا ثواب فی سبیل اللہ بیس غزوات سے بڑا ہے اور بے شک مجھ پرایک مرتبه درود بھیجناان سب کے برابر ہے' ۔ (القول البدلغ)

हबीबे रब्बे यगाना, हामिले अनवारे करीमाना क ने फरमाया! फराईज़ की अदाईगी का पुख़्ता अज़्म कर लो के इस का सवाब फी-सबीलिल्लाह बीस गृज़वात से बड़ा है और बे-शक मुझ पर एक मर्तबा दरूद भेजना इन सब के बराबर है''। (अल-कोल अल-बदी)

اَللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِكُ عَلَى حَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ وَّالِهِ صَلاَةً كَمَا تُصَلِّي بحَسُب شَانِكَ

کے حضرت علی کے سے روایت ہے کہ خلق کے سرور، غریب پرور، فیض کے سمندر، خیر البشر نے گارشاد فرمایا! ''کہ جس نے اسلام لانے کے بعد جج بیت اللہ کیا اور جج کے بعد غزوہ میں شرکت کی، اللہ اس کے غزوہ کا ثواب چارسوبار جج خانہ کعبہ کے تواب کے برابرعطافر ما تا ہے۔ بیہ ن کرضعیف اور سن رسیدہ صحابیوں کے دلوں پر رنج و الم کا پہاڑ ٹوٹ پڑا کہ واحسر تا! جوانی باتی نہرہی۔ جج تو بجالا سکتے ہیں لیکن شرکت غزوہ کی تاب وطاقت نہیں۔ ہم لوگ تو اس عظیم کارِثواب سے محروم رہ گئے۔ سرور کونین کی تاب وطاقت نہیں۔ ہم لوگ تو اس عظیم کارِثواب سے محروم رہ گئے۔ سرور کونین کی تاب وطاقت نہیں۔ ہم لوگ تو اس عظیم کارِثواب میں محروم رہ گئے۔ سرور کونین خدمت ہوکر کہنے گا۔ ایر دروں کی تسکین کی خاطر، حضرت جرائیل ایس کی خاصر خدمت ہوکر کہنے گا! کہ اے رسول خدا گا اللہ تعالی فرما تا ہے! کہ جو شخص آپ خدمت ہوکر کہنے گا! کہ اے رسول خدا گا اللہ تعالی اس ایک بار درود

🙀 درود معراج حيدري و فضائل درود و سلام ۱

پڑھنے کے ثواب کو،ایسے چارسوغزوات کے ثواب کے برابر کردے گا،جن غزوات کا ہرغزوہ چارسوبار چے ہیت الحرام کا ثواب رکھتا ہوگا''۔(القول البدیع)

हज्रत अली के से रिवायत है के खल्क़ के सरवर, गृरीब प्रवर, फेज़ के समुन्द्र, ख़ैरूल बशर ने इरशाद फरमाया! कि ''जिस ने इस्लाम लाने के बाद हज बेतुल्लाह किया और हज के बाद गृज़वा में शिरकत की, अल्लाह इस के गृज़वे का सवाब चार सौ बार हज खाना काबा के सवाब के बराबर अता फरमाता है। यह सुन कर ज़र्ड़फ और सन रसीदा सहाबियों के दिलों पर रंज व अलम का पहाड़ टूट पड़ा के व-अहसरता! जवानी बाक़ी न रही। हज तो बजा ला सकते हैं लेकिन शिर्कत गृज़वा की ताब व ताक़त नहीं। हम लोग तो उस अज़ीम कारे सवाब से महरूम रह गए। सरवर कोनेन के आशिकों और जॉ निसारों की तसकीन के खातिर, हज़रत जिबरईल हाज़िरे अधि खिदमत हो कर कहने लगे! के ऐ रसूले खुदा अल्लाह तआला फरमाता है! कि जो शख़्स आप पर आरज़्-ए मुहब्बत व अज़मत एक बार दरूद पड़ेगा। अल्लाह तआला इस एक बार दरूद पड़ने के सवाब को, ऐसे चार सौ गृज़वात के सवाब के बराबर कर देगा, जिन गृज़वात का हर गृज़वा चार सौ बार हज बेतुल हराम का सवाब रखता होगा''। (अल-कोल अल-बदी)

اَللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِكُ عَلَى حَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ وَّالِهِ صَلاَةً كَمَا تُصَلِّى بحَسُب شَانِكَ

درود معراج حیدری و فضائل درود و سالام

طرح چپ ہور ہوں جبکہ میرے کہنے والے کو تیری رحت نے ابھی تک نہیں بخشا۔
پیچکم تین بار ہوگا اور وہ پرندہ تین باریہی سوال کرے گا۔اللّٰد کا فر مان ہوگا!اب چپ
ہوجا کہ تیرے کہنے والے کو میں نے بخش دیا اور میری رحمت نے اسے اپنے دامن
میں لے لیا''۔ (معارج النوق)

साहिबे लोहे-कलम, मुरादे आदम, महबूबे हर दो आलम, शमा बज्मे दो आलम के ने फरमाया! के ''जो शख़्स कलमा पड़ता है और उस के बाद जिस्ता है और उस के बाद जी कहेगा तो यह जुमला उस के मूँह से सब्ज़ नूर की तरह निकलेगा। उस के दो पर होंगे। इतने इतने बड़े के अगर फेला दिए तो एक मशरिक और दूसरा मगृरिंग तक फेल जाए। फिर उस परिन्दे की आवाज़ बादल के गरजने की तरह सुनाई देगी। उस की प्रवाज़ अर्शे मोअला तक होगी। अर्शे मोअला उस की आवाज़ से काँप जाऐगा। अल्लाह तआला हुक्म करेगा, ऐ परिन्दे! खामोश होजा। वह परिन्दा कहेगा! किस तरह चुप हो रहूँ जब के मेरे कहने वाले को तेरी रहमत ने अभी तक नहीं बख़्शा। यह हुक्म तीन बार होगा वह परिन्दा तीन बार यही सवाल करेगा। अल्लाह का फरमान होगा! अब चुप हो जा के तेरे कहने वाले को मेने बख़्श दिया और मेरे रहमत ने उसे अपने दामन में ले लिए"। (मआरिज अल-नबवत)

اَللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِكُ عَلَى حَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ وَّالِهِ صَلاَةً كَمَا تُصَلِّى بحَسُبِ شَانِكَ

حضرت امیر المومنین حضرت عمر فاروق کی روایت ہے کہ میں نے ایک دن شہنشاہ ابرار، مدنی تاجدار، بے یاروں کے مددگار کی بارگاہ میں عرض کی یا روسول اللہ آ کی اُمت کا تحذیقو درود پاک ہے جوآپ کی بارگاہ میں پیش کیا جاتا ہے؟ آپ جاتا ہے آپ کی طرف سے اس تحذہ کے جواب میں کیا عطا کیا جاتا ہے؟ آپ کے فرمایا حضرت عمرتم نے بہت اچھا سوال کیا۔ میری اُمت کا تحذیقو جھے پر درود
 حضر فایا حضرت عمرتم نے بہت اچھا سوال کیا۔ میری اُمت کا تحذیقو جھے پر درود
 حضر فایا حضرت عمرتم نے بہت اچھا سوال کیا۔ میری اُمت کا تحذیقو جھے پر درود
 حضر فایا حضرت عمرتم نے بہت انہا سوال کیا۔ میری اُمت کا تحذیقو جھے پر درود
 حضر فایا حضرت عمرتم نے بہت انہا سوال کیا۔ میری اُمت کا تحذیق بھے بی درود کی میں کیا میں میں کیا ہے کہ ک

درود معراج حیدری و فضائل درود و سلام

پاک ہے مگر قیامت کے دن یہی درود پاک میری طرف سے اُمت کوتھند یا جائے گا۔ (معارج النبوۃ)

हज्रत अमीरूल मोमिनीन हज्रत उमर फारूक की रिवायत है कि मैं ने एक दिन शेहनशाहे अबरार, मदनी ताजदार, बेयारों के मद्दगार की की बारगाह में अर्ज़ की या रसूलल्लाह की आप की उम्मत का तोहफा तो दरूद पाक है जो आप की खिदमत में पेश किया जाता है आप की की तरफ से उस तोहफे के जवाब में कि अता किया जाता है? आप की ने फरमाया उमर तुम ने बहुत अच्छा सवाल किया। मेरी उम्मत का तोहफा तो मुझ पर दरूद पाक है मगर क्यामत के दिन यही दरूद पाक मेरी तरफ से उम्मत को तोहफा दिया जाऐगा। (मआरिज अल-नबवत)

اَللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِكُ عَلَى حَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ وَّالِهِ صَلاَةً كَمَا تُصَلِّيُ بِحَسُبِ شَانِكَ

 شاوجن وبشر، غریب پرور، فقر کے داور ﷺ نے فرمایا!''جو شخص اپنی زندگی میں
 مجھ پرسلام وصلو ۃ بھیجے گا تو اس کے مرنے کے بعد اللّٰدا پنی ساری مخلوقات کو حکم دے گا کہ اس شخص کے لیے دعائے رحمت طلب کی جائے''۔ (معارج النبوۃ)

शाहे जिन व बशर, ग्रीब प्रवर, फिक्र के दावर ఈ ने फरमाया! "जो शख़्स अपनी ज़िन्दगी में मुझ पर सलाम व सलात भेजेगा तो उस के मरने के बाद अल्लाह अपनी सारी मख़लूक़ात को हुक्म देगा कि इस शख़्स के लिए दुआए रहमत तल्ब की जाए"। (मआरिज अल-नबूवत)

اَللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِكُ عَلَى حَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ وَّالِهِ صَلاَةً كَمَا تُصَلِّيُ بِحَسُبِ شَانِكَ

قلب کے مرہم، گیسوئے پرخم، گلتان کرم ﷺ نے فرمایا! که 'الله تعالی نے ایک فرشتہ پیدافر مایا ہے۔ اس کا نام عزرائیل ہے۔ قیامت کے دن پیفرشتہ اپنے پر پھیلائے گا اور بیل صراط پر بچھا دے گا اور اعلان کرے گا، جس شخص نے رحمتِ کونین ﷺ پر درود

درودِ معراجِ حيدري و فضائلِ درود و سلام ١٥٠٥ هـ

یاک پڑھاتھامیرے پروں پرسے گزرتا جائے''۔ (معارج النوۃ)

क़ल्ब के मरहम, गैसु-ए पुरखम, गुलिस्ताने करम के ने फरमाया! कि "अल्लाह तआला ने एक फरिशता पैदा फरमाया है। उस का नाम इज़्ग्रईल है। क़्यामत के दिन यह फरिशता अपने पर फैलाऐगा और पुलसेरात पर बिछा देगा और ऐलान करेगा, जिस शख़्स ने रहमते कोनेन कि पर दरूदे पाक पड़ा था मेरे परो पर से गुज़्रता जाए"। (मआरिज अल-नबूवत)

وظيفه درودِ معراج

ٱللَّهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمُ وَبَارِكُ عَلَى حَبِيبِكَ مُحَمَّدٍ وَّالِهِ صَلاَّةً

كَمَا تُصَلِّى بِحَسُبِ شَانِكَ

اگرکوئی ۱۳۳۳ مرتبهاس درود پاک کو بمیشه ورد میں رکھے:۔

- ا۔ انوارکثیرہ حاصل ہوتے ہیں۔
- ۲ بہت سے اسرار منکشف ہوجاتے ہیں۔
- سے حضور نبی اکرم ﷺ کی زیارت خواب میں ہوجاتی ہے۔
 - م قطب کے درج تک پہنچنے کا ذریعہ ہے۔
 - ۵ باطنی اور ظاہری رزق بسہولیت میسر آتا ہے۔
- ۲ نفس شیطان اورتمام دشمنول پراللاتعالی کی مدد سے غالب آ جا تا ہے۔
 - <mark>۔ اس کے خواص بے شاراوران گنت ہیں۔</mark>
- ۸۔ ایسےانواراور بھلائیاں دیکھ کران کی قدراللہ تعالیٰ کے سواکوئی نہیں جانتا ہے۔
- <mark>9۔ بیدرودانوارواسرارومعرفت کی کنجی ہے۔ جوشخص</mark>اس درودکو پڑھیگااس <mark>پراسرارو</mark>
 - ربانی کی راوکھل جائینگی، بیدرودشریف ایک طرح کااسم اعظیم ہے اوراس کو پڑھنے
 - والے کامقام صدافت سے نواز تاہے۔

درودِ معراجِ حيدري و فضائلِ درود و سلام ﴿ ﴿ ﴿

(21)

अगर काई 313 मर्तबा इस दरूद पाक को हमेशा विर्द में रखे।

- 1. अनवार कसीरा हासिल होते हैं।
- 2. बहुत से इसरार मुंकशिफ हो जाते हैं।
- 3. हुज़ूर नबी-ए करीम 🍇 की ज़ियारत ख़्वाब में हो जाती है।
- 4. कुतब के दर्जे तक पहुँचने का ज्रिया है।
- बातनी और जाहिरी रिज्क ब-सहुलियत मयस्सर आता है।
- 6. नफ्स शैतान और तमाम दुशमनों पर अल्लाह की मदद् से गालिब आ जाता है।
- 7. उस के ख़्वास बे शुमार और अन गिनत हैं।
- ऐसे अनवार और भलाईयाँ देख कर उन की कृद्र अल्लाह तआला के सिवा कोई नहीं जानता है।
- 9. यह दरूद अनवार व इसरार व मारफत की कुंजी है। जो शख़्स इस दरूद को पड़ेगा उस पर इसरार रब्बानी की राहें खुल जाऐंगी, यह दरूद शरीफ एक तरह का इस्में आज़म है और इस को पड़ने वाले का मकाम सदाकृत से नवाजृता है।

درودمعراج حیدری برائے قضائے حاجات

چار رکعت اِس طرح پڑھیں پہلی رکعت میں سورپ فاتحہ کے بعد سورہ اخلاص
دس بار، دوسری رکعت میں بیس بارتیسری اور چوتھی میں چالیس بار پڑھیں، بعد سلام
کے درودِ معراج اکیاون باراور پچاس بارسورہ اخلاص اور ستر بار لاحو له ولا قوة
الا بالله پڑھیں۔ پھراکیاون بار درودِ معراج پڑھیں عبداللہ فرماتے ہیں بیطریقہ
احقوں کو نہ سکھا کیں کہ گنا ہوں پر دلیری کریں۔
کسی بھی دینی و دنیاوی مقصد کے لیے درودِ معراج پانچ سوگیارہ باراکتالیس
دن کر پڑھیں انشاء اللہ مقصد میں کا میا بی ہوگی۔

दरूदे मेराजे हैदरी बराए कज़ाऐ हाजात

चार रकअत इस तरह पढ़े पहली रकअत में सूरह फातिहा के बाद

درودِ معراجِ حيدري و فضائلِ درود و سلام هُرُهُ

(22)

सूरह इख़्लास 10 बार, दूसरी रकअत में 20 बार, तीसरी और चोथी रकअत में 40 बार पढ़े बाद सलाम के दरूदे मेराज 111 बार, 50 बार सूरह इख़्लास और 70 बार ''ला होला वला कुवता'' पढ़े फिर 111 बार दरूदे मेराज, अब्दुल्लाह फरमाते हैं यह तरीका अहमकों को न सिखाएं कि गुनाहों पर दिलेरी करें। ये अमल सात जुम्मेरात बाद नमाज़े इशा करें। किसी भी दीनी या दुनियावी मक्सद के लिये 511 बार 41 दिन तक पढ़े इंशा अल्लाह मक्सद में कामियाबी होगी।

